# India - Republic of Korea Joint Issue

Bilateral consular relations between India and Republic of Korea (RoK) were established in 1962. In 1973, relations were upgraded to Ambassador-level (also with Pyongyang). Consistent Indian support for peaceful reunification of the two Koreas has been well received in this country.

However, historical and cultural contacts between the two peoples date back to ancient times. According to "SamgukYusa" or "The Heritage History of the Three Kingdoms" written in the 13th century, a Princess from Ayodhya (Suriratna) came to Korea, married King Kim-Suro, and became Queen Hur Hwang-ok in the year 48 AD. Queen Heo, then 16 years old, sailed across the ocean under the orders of the king of the "Ayuta" kingdom on a vessel that carried the Pasa Stone Pagoda, which was said to have calmed the high seas. She thus became the first woman to ever immigrate to Korea. After the royal wedding, the queen bore her king 10 sons and two daughters. Of the 10 sons, two took their mother's surname and became the progenitors of the Gimhae Heo clan. The Pasa Stone Pagoda that the queen brought to Korea was kept at Hogyesa Temple until the late Joseon Dynasty, at which time it was moved to the Tomb of Queen Heo. The pagoda currently sits inside a dedicated pavilion at the tomb and is preserved in excellent condition. Korean Buddhist Monk Hyecho (혜초, 704–787 CE) or Hong Jiao visited India from 723 to 729 AD. His travelogue "Pilgrimage to the five kingdoms of India" gives a vivid account of Indian culture, politics & society, including food habits, languages and climate.

The rationale for a close relationship between India and RoK has been reinforced in modern times by political and economic imperatives. The experience of colonial rule and the anti-colonial movements in both countries revived interest in each other. Nobel Laureate Rabindranath Tagore composed a short but evocative poem – 'Lamp of the East' - in 1929 about Korea's glorious past and its promising bright future. He wrote:

*"In the golden age of Asia Korea was one of its lamp bearers, And that lamp is waiting to be lit once again For the illumination of the East."*

India played an important and positive role in Korean affairs after Korea's independence in 1945. Mr K P S Menon of India was the Chairman of the 9-member UN Commission set up in 1947 to hold elections in Korea. The successful general elections held for the first time in the South in 1948, led to the establishment of the Republic of Korea on 15 August 1948.

In recent years, India - Republic of Korea (RoK) relations have made great strides and have become truly multidimensional, spurred by a significant convergence of interests, mutual goodwill and high level exchanges. In 2015, the relationship between both the countries were upgraded to "Special Strategic Partnership". The areas of cooperation between the two countries span areas as diverse as Trade, Commerce, Defence, Science & Technology, Culture, People-to-People exchanges etc.

The relationship witnessed new momentum following the inauguration of President Moon Jae-in's administration in May 2017. In the last one year, both countries had three VVIP visits. President Moon Jae-in and First Lady Kim Jung-sook visited India in 2018. Prime Minister Narendra Modi visited ROK in February 2019. The two countries are exploring areas of further collaboration under the synergistic frameworks of ROK's 'New Southern Policy' and India's Act East Policy.

Department of Posts is pleased to release a set of two Commemorative Postage Stamps and a Miniature Sheet to commemorate the bilateral relations between India and Republic of Korea


**Credits:**

| | | |
|---|---|---|
| Text | : | Based on the information received from Ministry of External Affairs, Government of India |
| Stamps/Miniature Sheet/ FDC/Brochure | : | Shri Sankha Samanta |
| Cancellation Cachet | : | Smt. Alka Sharma |


भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

विवरणिका BROCHURE

# भारत–कोरिया गणराज्य संयुक्त डाक टिकट

भारत और कोरिया गणराज्य के मध्य राजनयिक संबंधों की स्थापना 1962 में हुई। 1973 में ये राजनयिक संबंध राजदूत स्तर (प्योंगयांग के साथ भी) के बन गए। उत्तर और दक्षिण कोरिया के शांतिपूर्ण रूप से एक होने की मुहिम को भारत ने निरंतर समर्थन प्रदान किया है और भारत के इस दृष्टिकोण का देश में काफी स्वागत किया गया है।

भारत और कोरिया के लोगों के बीच ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक सह–संपर्क प्राचीन काल से ही रहा है। 13वीं शताब्दी में रचित "सैमगुक यूसा" अर्थात् "तीन साम्राज्यों के इतिहास की धरोहर" के अनुसार अयोध्या की राजकुमारी सूरीरत्ना कोरिया आईं और उन्होंने वहां के राजा किम सूरो से विवाह किया, जिसके उपरांत 48वीं ई. में वह महारानी हुर हवांग–ओक के नाम से विख्यात हुईं। महारानी हो मात्र 16 वर्ष की थीं, जब "अयुता" साम्राज्य के राजा के आदेश पर वे एक नाव में सवार होकर अपने साथ पासा प्रस्तर स्तूप (पगोडा) लेकर महासागर को पार करने के सफर पर निकल पड़ी। मान्यता है कि इस पासा प्रस्तर स्तूप (पगोडा) के प्रभाव के कारण अथाह सागर भी शांत हो गया। इस प्रकार, सूरीरत्ना प्रवास कर कोरिया जाने वाली प्रथम महिला बनीं। महारानी सूरीरत्ना से सम्राट किम सूरो के विवाह के उपरांत 10 पुत्र एवं 2 पुत्रियां हुईं। 10 पुत्रों में से 2 ने अपनी माता का उपनाम ग्रहण किया और जिमहे हो वंश के उत्तराधिकारी बने। पासा प्रस्तर स्तूप (पगोडा), जिसे महारानी अपने साथ कोरिया लाई थी, को उत्तर जोसेयोन साम्राज्यकाल तक होगयेसा मंदिर में रखा गया और इसके बाद इसे महारानी हो के मकबरे में एक विशेष मंडप में संरक्षित रखा गया है और यह आज तक बेहतरीन हालत में है। कोरियन बौद्ध भिक्षु हायेचो (704–787 सी.ई.) अर्थात् हॉग ज्याओ ने 723–729 ई. में भारत की यात्रा की। उन्होंने, अपने यात्रा वृतांत "भारत के 5 साम्राज्यों का तीर्थाटन" में भारतीय संस्कृति, यहां की राजनीति और समाज, खान–पान, भाषाओं और जलवायु का जीवंत और विस्तृत चित्रण किया है।

आधुनिक समय में राजनीतिक और आर्थिक कारणों से भारत और कोरिया गणराज्य के बीच करीबी संबंधों का औचित्य और दृढ़ हुआ है। दोनों देशों के साम्राज्यवादी शासन और साम्राज्यवाद के विरुद्ध शुरू हुए जन आंदोलनों के साझा अनुभव ने दोनों राष्ट्रों के बीच मैत्रीभाव को पुनः जागृत किया है। नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कोरिया के अतीत और उज्ज्वल भविष्य पर केंद्रित "पूरब का दीपक" शीर्षक से 1929 में एक सुंदर लघु कविता की रचना की। उन्होंने लिखा :–

"एशिया के स्वर्णिम युग में कोरिया एक प्रज्जवलित दीप की भांति था और यह दीप एक बार फिर रोशन होने की प्रतीक्षा में है, ताकि अपनी जगमग से यह पूरे पूरब को रोशनी से भर दे।"

भारत ने 1945 में कोरिया की स्वतंत्रता के बाद वहां के मामलों में महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभाई है। 1947 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा कोरिया में चुनाव के आयोजन के लिए एक 9 सदस्यीय आयोग का गठन किया गया, जिसका अध्यक्ष भारत के श्री के.पी.एस. मेनन को बनाया गया। 1948 में दक्षिण (कोरिया) में पहली बार आयोजित इन सफल आम चुनावों के परिणामस्वरूप 15 अगस्त, 1948 को कोरिया गणराज्य की स्थापना हुई।

विगत वर्षों के दौरान, भारत और कोरिया गणराज्य के द्विपक्षीय संबंध और भी बेहतर हुए हैं और परस्पर हितों, आपसी मैत्री तथा उच्च स्तरीय मुलाकातों के परिणामस्वरूप ये संबंध बहुआयामी बन चुके हैं। 2015 में दोनों राष्ट्रों के इन घनिष्ठ संबंधों को "विशेष कूटनीतिक भागीदारी" का दर्जा प्रदान किया गया। भारत और कोरिया विविध क्षेत्रों में परस्पर सहयोग कर रहे हैं, जिनमें व्यापार, वाणिज्य, रक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, संस्कृति तथा दोनों देशों के लोगों के बीच आपसी सह–संपर्क आदि शामिल है।

मई, 2017 में राष्ट्रपति मून जे–इन के सत्तासीन होने के बाद दोनों देशों के आपसी संबंधों को नई दिशा और गति प्रदान हुई है। पिछले 1 वर्ष के दौरान, भारत और कोरिया गणराज्य के शीर्ष शिष्टमंडलों ने आपस में तीन दौरे किए हैं। राष्ट्रपति मून जे–इन और उनकी पत्नी किम जुंग–सुक 2018 में भारत दौरे पर आए, वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फरवरी, 2019 में कोरिया गणराज्य की यात्रा की। दोनों देश कोरिया गणराज्य की दक्षिण देशों पर केंद्रित 'न्यू सदर्न पॉलिसी' तथा भारत की पूर्वी एशियाई देशों पर केंद्रित नीति 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के अंतर्गत आपसी सहयोग को और बढ़ाने की दिशा में प्रयासरत हैं।

डाक विभाग, भारत और कोरिया गणराज्य के मध्य द्विपक्षीय संबंध पर दो स्मारक डाक टिकट तथा एक मिनियेचर शीट का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

**आभार:–**

| | | |
|---|---|---|
| पाठ | : | विदेश मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त सूचना पर आधारित |
| डाक टिकट / मिनियेचर शीट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका | : | श्री शंख सामंत |
| विरूपण कैशे | : | श्रीमती अलका शर्मा |


भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

## तकनीकी आंकड़े
## TECHNICAL DATA

| | |
|---|---|
| मूल्य वर्ग | : 500 पैसा, 2500 पैसा |
| Denomination | : 500 p, 2500 p |
| मुद्रित डाक-टिकटें | : 500000 प्रत्येक |
| Stamps Printed | : 500000 each |
| मुद्रित मिनियेचर शीट | : 1.10 लाख |
| Miniature Sheets Printed | : 1.10 Lakh |
| मुद्रण प्रक्रिया | : वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : Wet Offset |
| मुद्रक | : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद |
| Printer | : Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html



मूल्य: ₹ 5.00